

विभूति नारायण राय के उपन्यासों में यथार्थपरकता

डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय

सहायक आचार्य (हिंदी)

के. पी. उच्च शिक्षा संस्थान झलवा, इलाहाबाद (उ.प्र.)

ईमेल - sppandeya340@gmail.com

आधुनिक साहित्य अपने वैचारिक भाव बोध और मानवीयता के विशेष संदर्भों के कारण कल्पना की परलौकिकता से परे हटकर यथार्थ की इहलौकिकता को केंद्र में रखता है। इसी संदर्भ में समकालीन साहित्य भी है। वर्तमान में समकालीन साहित्य का आशय 90 के बाद के समय के साहित्य से है। अपने समय से साक्षात्कार कराने वाली रचना ही समकालीन साहित्य है। रचनाकार अपने आलोचनात्मक दृष्टि से समाज में निहित विसंगतियों एवं अंतर्विरोधों का पड़ताल करता है और उसे रचनात्मक अभिव्यक्ति देता है। इस संदर्भ में कथा आलोचक शंभु कहते हैं- “समकालीनता न केवल एक विषय वस्तु या थीम है बल्कि इसमें रचनात्मक रूप देने वाली एक दृष्टि भी है। “समकालीनता अपने समय में रहते हुए उसके साथ-साथ चलते हुए उसमें आगे जाती है। काल या समय की अपनी एक सीमा का सामर्थ्य होती है। अपना एक तात्कालिक यथार्थ होता है। एक लेखक जब इस तत्कालवाद को लांघकर आने वाले समय की सच्ची और सही और संभावित तस्वीर उकेरने लगता है, दरअसल तभी वह समकालीन कहलाए जाने योग्य होता है।” समकालीनता के संदर्भ में शंभु गुप्त का यह कथन कथाकार विभूति नारायण राय के ऊपर बहुत ही सटीक बैठता है। 1981 में 'घर' उपन्यास से साहित्य की दुनिया में विधिवत कदम रखने वाले विभूति जी ने अपने समय का यथार्थपरक सृजन उपन्यास के रूप में किया है। यद्यपि विभूति जी इसके पहले भी छिटफुट रूप में व्यंग्य एवं छात्र जीवन में कविताएं लिखते थे लेकिन साहित्यिक दुनिया में कोई पहचान नहीं था। विभूति नारायण राय ने जब लिखना शुरू किया तो वह संक्रमण का दौर था। इस दौर में कथ्य एवं शिल्प दोनों में बदलाव शुरू हो गया था। एक तरफ जहाँ साहित्य में अति यथार्थ के प्रति मोह था तो वहीं दूसरी ओर इससे मुक्त होने की बेचैनी भी थी। अतीत का अति यथार्थ और वर्तमान का कल्पना और यथार्थ का मिश्रण एक नए तरह के कथ्य और शिल्प को गढ़ रहा था।

इस दौर में उदय प्रकाश, संजय, विनोद कुमार शुक्ल, मनोहर श्याम जोशी के कथा साहित्य में बदलाव की पृष्ठभूमि दिखती है। बाद के कहानीकारों ने इस बदलाव को अपने साहित्य नए ढंग से दर्ज किया। विभूति नारायण राय इसी संक्रमण काल के उपन्यासकार हैं जिन्होंने यथार्थ की जड़ता को तोड़ते हुए एक नए फलक पर यथार्थवादी साहित्य रचा। जनवादी दृष्टिकोण और संवेदनात्मक अनुभूति के कारण राय साहब ने उपन्यासों में अपने समय और समाज को वास्तविक रूप में चित्रित किया है। सर्वेश जैन ने विभूति नारायण राय के साहित्य पर लिखते हुए एक शीर्षक लिखती हैं- “विभूति नारायण राय अर्थात गत तीस वर्षों का भारतीय इतिहास” इस शीर्षक से ही स्पष्ट है कि विभूति जी ने जो साहित्य रचा है उसमें भारतीय जीवन का विगत तीस वर्षों का यथार्थ है। यह यथार्थ की भाव भूमि बदलते एवं नए बनते सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को बयां करते हैं। विभूति नारायण राय ने अब तक कुल पाँच उपन्यास 'घर' (1981), 'शहर में कर्फ्यू' (1986), 'किस्सा लोकतंत्र'(1993), 'तबादला' (2001), 'प्रेम की भूतकथा' (2010) है। पहला उपन्यास 'घर' और अभी तक का अंतिम उपन्यास 'प्रेम की भूत कथा' को छोड़कर शेष उपन्यासों की पृष्ठभूमि में एक तरह की साम्यता

1986 में प्रकाशित 'शहर में कर्फ्यू' इनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रसिद्धि को इसी बात से समझा जा सकता है कि यह लगभग सभी भारतीय भाषाओं एवं भारत के बाहर भी अन्य भाषाओं में भी अनुदित हो चुका है। विभूति जी ने यह उपन्यास पुलिस महकमे में उच्च अधिकारी रहते हुए सांप्रदायिक दंगों में पुलिसिया कार्यवाही किस तरह से होती है और दंगों के संदर्भ में पुलिस की स्थिति, पुलिस का सांप्रदायिकता के खिलाफ किसी विशेष तरह का प्रशिक्षण न होना और किसी खास धर्म के प्रति घृणा के भाव को बहुत सी महीन मानवीय पक्षों के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में लेखक की आत्म स्वीकारोक्ति है कि- “शहर में कर्फ्यू लिखना मेरे लिए एक त्रासदी से गुजरने जैसा था। उन दिनों मैं इलाहाबाद में नियुक्त था और शहर का पुराना हिस्सा दंगों की चपेट में था। हर दूसरे तीसरे साल होने वाले दंगों से यह दंगा मेरे लिए कुछ था। इस बार हिंसा और दरिदगी अखबारी पन्नों से निकलकर मेरे अनुभव संसार का हिस्सा बनने जा रही थी - एक ऐसा हिस्सा जो अगले कई सालों तक दुःस्वप्न की तरह मेरा पीछा नहीं छोड़ने वाला था। मुझे लगा कि इस दुःस्वप्न से मुक्ति का सिर्फ एक उपाय है इन अनुभवों को लिख डाला जाय।” विभूति जी के इस वक्तव्य से उनकी रचना प्रक्रिया को समझना आसान हो जाता है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों से विषय वैविध्यता खूब है। एक ही उपन्यास में कहने का ढंग भी भिन्न भिन्न है। यथार्थ को चित्रित करने में कोई दहराव नजर नहीं आता। 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास के केंद्र में सांप्रदायिकता की मानसिकता, राजनीति के लिए सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, किसी खास संप्रदाय का विरोध, पुलिस का चरित्र आदि मनःस्थितियों में व्यक्तियों के अलग-अलग व्यवहार का रेखांकन है। इलाहाबाद शहर के मुस्लिम बाहुल्य हिस्से में दंगे भड़कने के बाद कर्फ्यू लगने एवं गरीब मजदूर मुस्लिम परिवारों में भूखमरी की स्थिति, मौत का स्याह सन्नाटे को बहुत ही मार्मिक अंकन है। इस सन्नाटे को पुलिस की गाड़ियाँ तोड़ती हैं। आजादी के समय से ही दंगे इस देश का अनिवार्य हिस्सा बन गया था। आजादी के समय से ही दंगे नेताओं के राजनीतिक स्वार्थ और उनके दांव पेंच पर टिकती थी। जिसे अंग्रेजों ने भी समय-समय हवा दी। सांप्रदायिकता के संदर्भ में जवाहर लाल नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखते हैं- “भारत के अल्पसंख्यक यूरोप के अल्पसंख्यकों की भांति नस्ली या राष्ट्रीय अल्पसंख्यक नहीं हैं, ये धार्मिक अल्पसंख्यक हैं। नस्ली तौर पर भारत एक मिश्रित प्रजातियों का देश है पर यहाँ नस्ल को लेकर कभी कोई प्रश्न नहीं उठे।” राजनीति ने यहाँ धार्मिक अलगाव को सांप्रदायिक अलगाव में बदल दिया और दंगों के सारे आरोप मुस्लिमों पर थोप दिया। इस संदर्भ में लेखन का कहना है कि दंगे चाहे जो शुरू करता हो लेकिन मरते उसमें सबसे अधिक मुस्लिम ही हैं। सांप्रदायिकता के संदर्भ हमारे बीच यह भ्रम बरकरार है सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत मुस्लिम करते हैं। इस भ्रम को लेखन ने थोड़ा है और उपन्यास का यथार्थ परक तथ्यों से कथा यात्रा को तय किया है। इस संदर्भ में आलोचक शंभु लिखते हैं- “यह उपन्यास बड़ी

ताकत के साथ हमारे इस भ्रम और हिन्दू-फासिस्टों के इस षड्यंत्रपूर्ण दुष्प्रचार को तोड़ता है कि इस देश में मुसलमान ज्यादा आक्रामक हैं और दंगे वही भड़काते हैं।"

यह एक ऐसी धारणा है जिसका कोई आधार नहीं है। सारे आंकड़ें इसके विरुद्ध जाते हैं फिर यह धारणा बनी हुई है। बात-बात में मुस्लिम समुदाय को पाकिस्तान भेजने या चले जाने की धमकियाँ दी जाती है। जबकि धर्म के नाम पर एक अलग देश की मांग आम मुसलमानों ने की थी। कुछ राजनेताओं के लिए ही सत्ता सबसे बड़ी चीज थी। यही कारण था कि पाकिस्तान बनने के बाद भी बड़ी संख्या में मुसलमान वहां जाने के लिए तैयार नहीं हुए। इस संदर्भ में रिजवान कैसर का यह कथन विचारणीय है- "1946 के चुनावों में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तानी एजेंडे को मुसलमानों के लिए हर मर्ज की दवा के रूप में प्रायोजित किया था जिसने उन्हें वोट देने वाले उन मुसलमानों का समर्थन दिला दिया जो औसतन 15 प्रतिशत थे जबकि 11 प्रतिशत ने ही मुस्लिम लीग को वोट दिया। ऐतिहासिक सन्दर्भों में बात करें तो मुसलमानों के एक बटे दसवें हिस्से, वह भी ज्यादातर उच्च वर्ग की राय मुसलमानों पर थोप दी गई और उसे पूरे समुदाय का सामूहिक निर्णय बताया गया।" अधिक समर्थन न होने के बावजूद भी पाकिस्तान का निर्माण हुआ और भारत में मुसलमान शक के रूप देखे जाने लगे। शक और भय ने भारत के दो बड़े समुदाय के भीतर एक दूसरे के प्रति वैमनस्य बढ़ता चला गया। धार्मिक भिन्नता ने नस्लीय भिन्नता का रूप ले लिया। इसके फलस्वरूप सरकारी मिशनरी जिसे संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए काम करना होता है वह भी बहुसंख्यकवाद की शिकार हो गई और सांप्रदायिक दंगों में संवैधानिक मूल्यों की रक्षा न कर किसी खास समुदाय की तरफदारी करती नजर आने लगी।

लेखक विभूति नारायण राय ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में इलाहाबाद में दंगों को जैसा देखा, महसूस किया उसे यथार्थ रूप में उपन्यास के रूप में सृजित किया। यह उपन्यास आँखों देखी रिपोर्ट की तरह लगता है। शायद इसलिए इस उपन्यास को विजेंद्र नारायण सिंह ने रिपोर्टाज शैली का उपन्यास कहा है। 'शहर में कर्फ्यू' यथार्थ का अतिरेक नहीं है बल्कि यथार्थ के चरम को कथा में व्यक्त किया है। साईदा के मार्फत गरीबी, भूखमरी, बेबसी, लाचारी का जो चित्रण लेखन ने किया है वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है। साईदा की बीमार बच्ची दवा के अभाव में मर जाती है, साईदा उसे अस्पताल भी नहीं ले जा पाती। यह कथ्य तमाम निम्न वर्गीय, गरीब और वंचित मुस्लिम लोगों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होती है जिन पर सांप्रदायिकता का कहर सबसे अधिक टूटता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दंगों में ऐसे ही लोग सबसे ज्यादा यातना के शिकार होते हैं।

'किस्सा लोकतंत्र' लोकतंत्र के पतन की कथा है। जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन की व्यवस्था अब चंद घरानों की व्यवस्था हो गई है। भाई-भतीजावाद, जातिवाद, सत्ता सुख की शिकार हो गई है। संसदीय राजनीति में अपराधियों का बोलबाला हो गया है। आज राजनीति में अपराधी, माफिया और दलालों के गठजोड़ में परिणत हो गया है। इस उपन्यास के केंद्र में लोकतंत्र का अपराधीकरण मुख्य रूप से है। इस उपन्यास की कथा की शुरुआत पुलिस के द्वारा अपराधी तत्वों के पनपने से होती है और अंत इन अपराधियों के माफिया तत्वों के गठजोड़ द्वारा एक इतर सत्ता तंत्र को विकसित करने के साथ होता है। वर्तमान में राजनीतिक मूल्य का जो हास हुआ है अपराधी, राजनेता एवं सरकारी तंत्र का जिस तरीके से गठजोड़ है उसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। यह उपन्यास वर्तमान राजनीति के चेहरे से पर्दा हटाता है जो अपराधियों द्वारा संचालित होता है।

इस उपन्यास का अंतर्वस्तु लोकतंत्र का अपराधीकरण है। उपन्यास का नायक पीपी (प्रेमपाल यादव) है जो अपने इलाके का कुख्यात अपराधी है। शराब एवं भू माफिया के रूप में यह अपराधी राजनीति में कदम रखता है। इसे उस समय के राजनेताओं का साथ मिलता है जिसके लिए इसने पहले चंदा देता था और उनके लिए काम करता था। इस उपन्यास में लेखक ने फ्लैश बैक शैली का सहारा लेते हुए पीपी के अतीत के साथ कथा को विस्तार देता है। कथा आलोचक इस उपन्यास में फ्लैश बैक शैली के संदर्भ में कहते हैं कि- 'राय पी. पी. की किशोरावस्था के प्रसंगों का सविस्तार विवरण प्रस्तुत कराते हुए उस मनोवैज्ञानिक आधार को समझा देते हैं जो व्यवहार का नियमन करते हैं। यह उपन्यास लोकतंत्र के अपराधीकरण को बेपर्दा करता है।

'किस्सा लोकतंत्र' की तरह ही 'तबादला' भी सामान्य किस्म का उपन्यास है। इसे 'किस्सा लोकतंत्र' का विस्तार भी कहा जा सकता है। जिस जन विरोधी भ्रष्ट सत्ता की चर्चा वहां हुई है उसी का और अधिक विद्रूप यहाँ प्रस्तुत किया गया है। भ्रष्टाचार, कार्य संस्कृति के पतन की बानगी के तौर पर इसमें कार्यालय के वातावरण का चित्रण किया गया है।

'तबादला' 2001 में प्रकाशित विभूति जी का चौथा उपन्यास है। इसके केंद्र में भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार लोकतंत्र को घुन के माफिक चाट जाता है। इलाहाबाद में 12 वर्षों में एक बार लगाने वाले कुम्भ मेले को लेकर सरकारी तंत्र में जो भ्रष्टाचार व्याप्त है उसकी कथा कहता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस उपन्यास में तबादला उद्योग और भ्रष्टाचार की कथा है। अधिशासी अभियंता कमलाकांत और दूसरे अधिशासी अभियंता बटुकचंद उपाध्याय का तबादला सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी कहता है। कमलाकांत बर्मा के तबादले और उनके

स्थान पर बटुकचंद्र उपाध्याय अधिशासी अभियंता के पद स्थापित होने, तत्पश्चात कमलाकांत बर्मा के उसी पद पर पुनः स्थानांतरण होने और एक बार फिर बटुक चंद्र उपाध्याय के उन्हीं दांव पेशों का इस्तेमाल करके कमलाकांत वर्मा को हटाकर अपनी पुरानी जगह पर आ जाने का वर्णन है। इस तरह तबादला करवाने और रुकवाने के लिए दोनों अधिशासी अभियंता तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। जैसे देकर अपना तबादला करवाते हैं और फिर जैसे देकर तबादला रुकवाते हैं। तबादले के माध्यम से भ्रष्टाचार की लूट किस तरह मची हुई है और जनता का पैसा किस तरह से लूट की भेट चढ़ जाता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में बखूबी हुआ है। भ्रष्टाचार की जो कार्य संस्कृति सरकारी दफ्तरों में व्याप्त है यह उपन्यास उसकी एक बानगी प्रस्तुत करता है।

विभूति नारायण राय के रचनाओं के पात्र किसी काल्पनिक दुनिया से नहीं होते हैं, बल्कि हमारे आस-पास के घर-परिवार व जीवन के हिस्से लगते हैं। राय के पात्र अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ कथा पटल पर उपस्थित होते हैं। इन पात्रों की भूमिका एक पक्षीय नहीं होती है वरन बहुआयामी जीवन चरित्रों के साथ प्रस्तुत होते हैं। इनके तीन उपन्यास 'शहर में कफरू', 'किस्सा लोकतंत्र' और 'तबादला' की पृष्ठभूमि में लोकतंत्र है। लोकतंत्र का अपहरण किस तरह से राजनेता, अपराधी और प्रशासन के आला अधिकारी मिलकर करते हैं उपन्यासों की केंद्रीय अंतर्वस्तु है।

संदर्भ :-

1. सिंह, पुष्पपाल, (2015). समकालीन हिन्दी कहानी: युगबोध का संदर्भ.
2. राय, विभूति नारायण. (2003). शहर में कफरू, भूमिका से, इलाहाबाद : इतिहास बोध प्रकाशन.
3. गुप्त, शंभु और जैन सर्वेश . (2012). अनहद गरजे. दिल्ली: शिल्पायन प्रकाशन.
4. नेहरू, जवाहरलाल. (198). डिस्कवरी ऑफ इंडिया, दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. सिंह, विजेंद्र नारायण एवं सिंह, कृष्णकुमार. (2015). इलाहाबाद: साहित्य भंडार.
6. यादव, राजेन्द्र. (अगस्त, 2003). हंस अक्षर प्रकाशन: दिल्ली.

फादर कामिल बुल्के का हिंदी साहित्य में योगदान सौरभ शुभम (पीएचडी स्कॉलर) हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

फादर कामिल बुल्के (1909-1982) हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक हैं, जिन्हें अक्सर अंतरसांस्कृतिक समझ और विद्वता का प्रतीक माना जाता है। एक बेल्जियन जेसुइट पादरी, जिन्होंने अपना जीवन भारत को समर्पित किया, बुल्के ने न केवल हिंदी भाषा में महारत हासिल की बल्कि इसके प्रमुख समर्थकों में से एक बन गए। उनकी यात्रा केवल उनकी भाषाई विशेषज्ञता की गहराई के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य के सांस्कृतिक और बौद्धिक ताने-बाने में उनके योगदान के लिए भी उल्लेखनीय है। बुल्के का कार्य इस बात का शानदार उदाहरण है कि कैसे विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्ति किसी भाषा और उसके साहित्यिक परंपराओं में गहरा योगदान दे सकते हैं। उनके कार्यों में अनुवाद, शब्दकोश निर्माण, और विद्वतापूर्ण विश्लेषण शामिल हैं, विशेष रूप से धार्मिक और दार्शनिक विषयों पर। उनकी प्रमुख कृति, राम कथा: उत्पत्ति और विकास, हिंदू धार्मिक अध्ययन का एक आधारभूत ग्रंथ मानी जाती है और रामायण की व्याख्याओं को गहराई से प्रभावित करती है। यह लेख बुल्के के जीवन, हिंदी के प्रति उनके प्रेम, और हिंदी साहित्य एवं भारतीय बौद्धिक धरोहर को समृद्ध बनाने के उनके प्रमुख योगदानों पर प्रकाश डालता है।

हिंदी और शैक्षणिक उपलब्धियों में प्रवीणता-

विदेशी होते हुए भी बुल्के ने हिंदी भाषा में असाधारण निपुणता प्राप्त की, चाहे वह बोलने में हो या लिखने में। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन किया, जहां उन्होंने रामायण पर अपने अद्वितीय शोध के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनकी डॉक्टरेट थीसिस, "राम कथा: उत्पत्ति और विकास", में रामायण की उत्पत्ति, विकास और विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं में इसके विविध अर्थों का विश्लेषण किया गया। यह कार्य भारतीय महाकाव्यों और उनकी सांस्कृतिक महत्ता के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण योगदान बना हुआ है।

बुल्के की जटिल भारतीय ग्रंथों की सटीक और संवेदनशील व्याख्या करने की क्षमता ने भारतीय विद्वानों के बीच उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई। संस्कृत में उनकी दक्षता ने हिंदू शास्त्रों और दार्शनिक परंपराओं की उनकी समझ को और अधिक समृद्ध किया, जिससे वे इन ग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन कर सकें। राम कथा: प्रारंभ और विकास फादर द्वारा किए गए अध्ययन "राम कथा: प्रारंभ और विकास" में रामायण की गहरी और विस्तृत जांच की गई है। इस विद्वतापूर्ण अध्ययन में, उन्होंने रामायण की कथा के ऐतिहासिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास का विश्लेषण किया है। फादर ने रामायण के विभिन्न संस्करणों की तुलना की है, जिसमें वाल्मीकि द्वारा रचित प्रारंभिक संस्कृत पाठ के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, बांग्ला, ओडिया, मलयालम और अन्य भाषाओं में क्षेत्रीय संस्करणों को भी शामिल किया है। उनका शोध यह स्पष्ट करता है कि रामायण केवल एक धार्मिक पाठ नहीं है; यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर बन चुकी है, जो भारत और दक्षिण एशिया के विभिन्न समुदायों को प्रभावित करती है। बुल्के ने यह भी अध्ययन